इकाई 11 शक्ति के सामाजिक आधार

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 अर्थ

11.3 शक्ति का वर्गीकरण

11.4 शक्ति का वितरणः विभिन्न सिद्धान्त

- 11.4.1 अभिजातवादी सिद्धान्तः पैरेटो और मोस्का
- 11.4.2 अमरीका में अभिजातवादी सिद्धान्तः राइट मिल्स
- 11.4.3 बहुलवाद
- 11.4.4 शक्ति बल प्रयोग के रूप में: मैक्स वेबर

11.5 शक्ति के प्रति परस्पर विरोधी दृष्टिकोण

- 11.5.1 शक्ति की बहुलवादी धारणा
- 11.5.2 अमरीका का अनुभवाश्रित लोकतांत्रिक सिद्धान्त या शास्त्रीय बहुलवाद
- 11.5.3 समूह सिद्धान्त
- 11.5.4 निगमवादी सिद्धान्त

11.6 मार्क्सवादी सिद्धान्त

11.7 सारांश

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई में शक्ति और उसके सामाजिक आधारों की विवेचना की गई है। जिन सिद्धान्तों ने शक्ति और उसके वितरण का अध्ययन किया है, इसमें उनकी भी चर्चा की गई है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को समझ सकेंगेः

- शक्ति का अर्थ;
- वर्गीकरण और वितरण; तथा
- शक्ति के विभिन्न सिद्धान्त

11.1 प्रस्तावना

शक्ति सभी राजनीतिक धारणाओं में सबसे बुनियादी धारणा है। यह राजनीति विज्ञान के आधारों में एक है। शक्ति के महत्व के बारे में राजनीतिक शास्त्री लगभग पूरी तरह सहमत हैं। फिर भी इसकी परिभाषा के बारे में तथा इसकी धारणा और माप को लेकर उनमें मतभेद हैं।

11.2 अर्थ

मोटे अर्थ में शक्ति से अभिप्राय वांछित प्रभाव पैदा करना है। **व्यक्ति जो कुछ पाना चाहता है, यह उसी को पाने की क्षमता का नाम है।** शक्ति संबंधी अनेक दृष्टिकोणों में **टाल्कट पार्सनस** से जुड़ा दृष्टिकोण 'की शक्ति' (power to) सबसे महत्वपूर्ण है। पार्सनस के अनुसार शक्ति से अभिप्राय **सामाजिक, राजनीतिक** और **आर्थिक** लक्ष्यों को पाने के लिए अपने नागरिकों की प्रतिबद्धता का उपयोग करने के बारे में सरकार की क्षमता है। सरकार की **शक्ति** इससे तय होती है कि **वह समुदाय के लक्ष्यों को कितने प्रभावी ढंग से पूरा करती है।** इस तरह **पार्सनस** की राय में **शक्ति वह साधन है जिसके द्वारा शासन** या **शासक समाज के उद्देश्यों को पूरा करते हैं।** यह राज्य पर नियंत्रण पाने की दिशा में किसी एक या दूसरे समूह की योग्यता नहीं है।

पार्सनस की शक्ति की परिभाषा पर्याप्त क्यों नहीं समझी गई?

इसके सकारात्मक अर्थ के बावजूद अनेक राजनीतिशास्त्री पार्सनस की शक्ति की परिभाषा को बहुत संकीर्ण मानते हैं। पार्सनस से मतभेद रखनेवालों के लिए **राजनीति इन संबंधित परस्पर विरोधी मतों का युद्धक्षेत्र है कि किन लक्ष्यों के या किसके लक्ष्यों के, बल्कि किस समूह के लक्ष्यों के लिए प्रयास किया जाना चाहिए।**

शक्ति का निहित तत्व **सहमति नहीं, टकराव है।** शक्ति का अर्थ प्रायः विरोध के बावजूद अपनी बात को मनवाने की योग्यता है। **राबर्ट डाहल** और दूसरे **बहुलवादियों** द्वारा समर्थित a विचार **"की शक्ति"** (Power to) की बजाय **'पर शक्ति'** (Power over) की बातें करता है। अपने अस्तित्व के अंतिम वर्षों में भूतपूर्व सोवियत संघ में 'पर शक्ति' और **'की शक्ति'** का ऐसा ही भेद देखा गया। किसी केन्द्रीय सरकार को प्राप्त शक्ति में इतनी कमी भी आ सकती है कि उसके वितरण का मुद्दा गौण हो जाए।

11.3 शक्ति का वर्गीकरण

शक्ति केवल सत्ता, हिंसा, बल या युद्ध का नाम नहीं है। इसीलिए **केनेथ बोल्डिंग** ने अपनी रचना *थ्री फेसेज़ ऑफ पावर* में इसके रूपों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है।

बल प्रयोग की धमकी (बोल्डिंग इसे 'डंडा' कहते हैं) सेना और पुलिस द्वारा दी जाती है जो राज्य की बलप्रयोगी संस्थाएँ हैं। राज्य को अधिकार प्राप्त होता है कि अगर कर न अदा किए जाएँ, अगर कानूनों का पालन न हो, आदि, तो वह अपने नागरिकों की स्वाधीनता छीन सकता है हालांकि अनेक अवसरों पर राज्य की बल प्रयोग की शक्ति निहित मात्र होती है। यही उसकी प्रभाविता का सूचक है।

विनिमय शक्ति (केनेथ बोल्डिंग इसे 'सौदा' कहते हैं) अधिक प्रभावी होती है क्योंकि शक्ति के इस स्वरूप में सकारात्मक दृष्टिकोण है। इसमें सौदेबाजी की अवधारणा है और सौदा किसी प्रतिदान (रिवार्ड) पर आधारित होता है। तो भी यह सौदा शक्ति का ही एक रूप है क्योंकि इसमें एक व्यक्ति दूसरे के व्यवहार में परिवर्तन लाता है। लगभग सभी आधुनिक राज्यों में नागरिक और राज्य का संबंध विनिमय या अनुबंध का संबंध है। नागरिक राज्य की सत्ता को मानने, उसका पालन करने की सहमति देते हैं और राज्य नागरिकों के भरण-पोषण, उनकी रक्षा की सहमति देता है। यह अनुबंध काल्पनिक होता है पर इसमें विनिमय का अस्तित्व अवश्य रहता है।

अनुग्रह का निर्माण (बोल्डिंग के अनुसार 'चुंबन' की पद्धति) एक और विधि है जिसके द्वारा निष्ठा, सम्मान और प्रतिबद्धता जगाने की क्षमता पैदा होती है। परिवार और धार्मिक संस्थाएँ ऐसी दो सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाएँ हैं जो शक्ति का ऐसे अनुग्रही ढंग से उपयोग करती हैं। अधिकांश इस्लामी राज्यों में **तत्ववादी** संगठन इसी तर्ज पर काम करते हैं।

एस. ल्यूकास जैसे अन्य व्यक्तियों का दावा है कि **शक्ति सिर्फ वहीं नहीं है जो बोल्डिंग बतलाते हैं। इसका व्यवहार वहीं होता है जहाँ जनता के यथार्थ हित उपेक्षित किए जाते हैं।** प्रदूषण फैलाने वाला एक कारखाना आसपास रहने वालों को प्रभावित करता है। यह उनकी जानकारी के बिना उन पर शक्ति का व्यवहार करता है। इसी तरह जो सरकार देशभक्ति का जोश जगाकर फौजी भरती करती हैं वह भी दूसरों के ज्ञान, मूल्यों और वरीयताओं का इस्तेमाल करके अपनी जनता पर शक्ति का व्यवहार करती है।

हम इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि एक आधुनिक राज्य की शक्ति अनुग्रह के बहुत व्यापक स्रोतों पर आधारित होती है। *थ्री फेसेज ऑफ पावर* में केनेथ बोल्डिंग ने शक्ति के प्रति जो तीन दृष्टिकोण सामने रखे हैं वे ज्ञानवर्धक हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि **शक्ति अनेक तत्वों के संभोग पर आधारित होती है।**

11.4 शक्ति का वितरणः विभिन्न सिद्धान्त

शक्ति क्या है, इसका व्यवहार कैसे होता है, इसे मापा कैसे जाता है - इससे जुड़े विवादों के अलावा शक्ति से संबंधित एक और महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि **समाजों में इसका वितरण किस प्रकार होता है।** राजनीतिक प्रणालियों, अर्थात् लोकतंत्र व तानाशाही, दोनों को ध्यान से देखें तो दोनों के बीच अंतर दिखाई देते हैं। सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त **अभिजातवादी और बहुलवादी सिद्धान्तों** का है। **अभिजातवादियों** का कथन है कि दोनों के बीच कोई खास अंतर नहीं है।

11.4.1 अभिजातवादी सिद्धान्त : पैरेटो और मोस्का

अभिजातवादियों (एलीटिस्ट्स) का विचार है कि दोनों व्यवस्थाओं में कोई खास अंतर नहीं है। अभिजातवादी सिद्धान्त के तीन प्रतिपादक हैं: **विल्फ्रेडो पैरेटो** और **गेतानो मोस्का** (दोनों इटली के) और जर्मनी का **राबर्ट मिशेल्स**। उनकी रचनाओं ने 20वीं सदी में शक्ति की धारणा संबंधी चिंतन पर गहरा प्रभाव डाला।

पैरेटो को पूरा-पूरा विश्वास था कि सभी समाज

एक छोटे से शासक अभिजात वर्ग,

एक गैर-शासक अभिजात वर्ग और

जनसमूह या गैर-अभिजातों में विभाजित होते हैं।

अभिजातों का परिचलन (सरकुलेशन ऑफ एलीट्स) हो सकता है, पर अभिजातों का अस्तित्व फिर भी रहता है।

मोस्का का तर्क था कि एक **श्रेष्ठतर संगठन** और **बुद्धि** ही शासक अभिजातों की सत्ता का आधार होती है। असंगठित बहुसंख्यक जनता पर एक छोटे से असंगठित अल्पसंख्यक समूह का वर्चस्व अपरिहार्य है।

अपने इतालवी समकक्षों के विपरीत **राबर्ट मिशेल्स** ने विशिष्ट संगठनों का अध्ययन किया। उसने अपना सुप्रसिद्ध **'अल्पतंत्र का लौह नियम'** प्रतिपादित किया। अल्पतंत्र (ओलिगार्की) का अर्थ थोड़े से लोगों का शासन है। अपने नया रास्ता दिखाने वाले अध्ययनों में मिशेल्स ने साबित किया कि उनका यह नियम सोशलिस्ट पार्टियों पर, अधिकांश संगठनों पर, यहाँ तक कि इंग्लैण्ड की लेबर पार्टी पर भी लागू होता है।

11.4.2 अमरीका में अभिजातवादी सिद्धान्तः राइट मिल्स

यूरोप में जन्म लेने वाले इन सिद्धान्तों के आधार पर 1920 के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका में अनेक समाजशास्त्रीय अध्ययन हुए। उन्होंने स्थानीय समुदायों में शक्ति के वितरण की छानबीन की। उनमें से अधिकांश का निष्कर्ष था कि या तो उच्चवर्गीय या मध्यवर्गीय पृष्ठभूमियों वाले लोगों का एक छोटा सा अल्पसंख्यक समूह हमेशा इन समुदायों में अपना प्रभुत्व बनाए रखता है। सिटी कौंसिलों या सामुदायिक संस्थाओं में बार-बार ये लोग ही स्थान पाते हैं। इस तथ्य ने अमेरिका जैसे तथाकथित लोकतांत्रिक देश तक में स्थानीय सुरक्षा में एक शासक अभिजात वर्ग की धारणा की पुष्टि की।

सी राइट मिल्स अभिजातवादी सिद्धान्त के एक और महत्वपूर्ण समर्थक थे। अपने सुप्रसिद्ध अध्ययन **द पावर एलीट** में मिल्स ने तर्क दिया कि राजनीतिक नेता वे प्रमुख समूह हैं जो या तो पृष्ठभूमि में रहकर या कभी-कभी निर्वाचित पदों पर आसीन होकर अमेरिकी राजनीति को संचालित करते हैं।

आज मिल्स के सिद्धान्त को **निगमवाद (कारपोरेटिज्म)** का एक संस्करण कहा जाता है। इसके अनुसार यथा-विधि निर्वाचित जन-प्रतिनिधि व्यापार और सेना जैसे अन्य संस्थाबद्ध हितों के आगे अपनी शक्ति खोते जा रहे हैं।

11.4.3 बहुलवाद

राजनीतिशास्त्र में बहुलवाद (प्ल्यूर्टलिज्म) शक्ति से संबंधित दूसरा सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। जहाँ अभिजातवाद **एक** अल्पमत समूह के शासन की बात करता है, वहीं बहुलवाद अल्पमत **समूहों** के शासन की बात करता है। यह एक विविधता का सिद्धान्त है। इसका मुख्य तर्क यह है कि शासन के आधुनिक रूपों में खुलापन है तथा विभिन्न हित और समूह आपस में प्रभाव पाने के लिए प्रतियोगिता करते हैं।

बहुलवादियों में सबसे प्रमुख हैं **राबर्ट डाहल** जिनका निष्कर्ष था कि शासक अभिजातों का अस्तित्व नहीं होता और शक्ति **हितों और समूहों की विविधिता** के द्वारा स्वयं को व्यक्त करती है। उनका यह निष्कर्ष कनेक्टीकट (अमेरिका) के न्यू हैवेन शहर के गहन अध्ययन पर आधारित था। 1970 के दशक तक अमेरिका में राजनीतिशास्त्र के अधिकांश लेखक एक वांछित और आदर्श सिद्धान्त के रूप में बहुलवाद का समर्थन करने लगे थे। वे बहुलवाद के लाभ भी समझने लगे क्योंकि उसकी विखंडित प्रकृति का अर्थ यह था कि सुविचारित दृष्टिकोणों को विशेष महत्व मिलता है। यह एक व्यक्ति, एक मत (वोट) की और बहुमत के शासन के लोकतांत्रिक सिद्धान्त का एक बेहतर रूप भी था।

आलोचनाः लेकिन आलोचकों ने बहुलवादियों पर निर्णय-प्रक्रिया पर अधिक जोर देने का आरोप लगाया क्योंकि बहुलवादियों ने अनिर्णयों की उपेक्षा की। इसके अलावा जनता का एक छोटा सा महत्वपूर्ण भाग उपेक्षा का भाव अपनाता है तथा इतना कटा-कटा रहता है कि वह इसमें शामिल नहीं होता। इसलिए यह तर्क अधिकाधिक दिया जा रहा है कि बहुलवादियों ने पश्चिमी समाजों में **शक्ति के केवल एक रूप** को देखा।

11.4.4 शक्ति बल प्रयोग के रूप में: मैक्स वेबर

बल प्रयोग शक्ति का एक और रूप है। अधिकांश शासकों की समस्या यह होती है कि अपनी स्थिति को वैध सत्ता का रूप कैसे दें। सत्ता (अथारिटी) शासन करने का अधिकार है। सत्ता के संबंधों का एक सोपान (हायरार्की) होता है। जर्मन समाजशास्त्री **मैक्स वेबर** ने सत्ता के अनेक आधारों का एक मौलिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने इनको **परंपरागत, करिश्माई और वैधानिक-बुद्धिसंगत** नाम दिया। पहला प्रकार परंपरागत (ट्रेडिशनल) सत्ता का है। वेबर कहते हैं: "परंपरागत सत्ता में मौजूदा व्यवस्था को पवित्र, शाश्वत और अनुल्लंघनीय माना जाता है। प्रायः वंशगत रूप से निर्धारित प्रभुत्वशाली व्यक्ति या समूह को बाकी जनता पर शासन करने के लिए पूर्व-निर्दिष्ट माना ज़ाता है। प्रजा शासक से निजी निर्भरता और निष्ठा की परंपरा के कारण बंधी होती है जो **'राजाओं के दैवी अधिकार'** जैसे सांस्कृतिक विश्वासों के कारण और भी पुष्टि होती है।"

करिश्माई सत्ता वेबर की दूसरी श्रेणी है। नेताओं की आज्ञा का पालन इसलिए किया जाता है कि वे अपने अनुयायियों को प्रेरित करते हैं। अक्सर नायकों का अनुसरण करने वाली जनता उनको असाधारण और पराप्राकृतिक गुणों से विभूषित मानती है। लेकिन करिश्माई सत्ता सामान्यतः एक **अल्पकालिक वस्तु** होती है।

तीसरी श्रेणी **वैधानिक-बुद्धिसंगत** (लीगल रेशनल) सत्ता की है। इसमें सत्ता सिद्धान्तों पर आधारित होती है और कानून के शासन का पालन किया जाता है। सभी आधुनिक नौकरशाहियाँ इसी प्रकार की सत्ता के उदाहरण हैं।

मैक्स वेबर के अपने शब्दों में, 'शक्ति दूसरों के विरोध के बावजूद एक सामुदायिक कार्रवाई में किसी व्यक्ति या अनेक व्यक्तियों के लिए **अपनी इच्छा** को सरकार करने का अवसर होती है।'

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों के साथ अपने उत्तरों को मिलाइए।

1) *थ्री फेसेज ऑफ पावर* के लेखक कौन हैं?

.....

.....

.....

.....

2) अभिजातवादी सिद्धान्त का विश्वास क्या है?

.....

.....

.....

.....

3) अभिजातवाद बहुलवाद से किस अर्थ में भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

11.5 शक्ति के प्रति परस्पर विरोधी दृष्टिकोण

समकालीन राजनीतिशास्त्र की इस सबसे महत्वपूर्ण धारणा को समझने के लिए सैद्धान्तिक स्तर पर तीन प्रमुख दृष्टिकोणों की पहचान की जा सकती है। जैसा कि कहा गया है, **बहुलवादी या अनुभवाश्रित लोकतांत्रिक सिद्धान्तकार** किसी विशेष समाज में **शक्ति की विखंडित प्रकृति** पर ध्यान देते हैं; **निगमवाद के सिद्धान्तकार राज्य की नीतियों और निर्णयों के निर्धारण में शासनेतर संस्थाओं के महत्व** पर जोर देते हैं। एक विचारधारा के रूप में **मार्क्सवाद** के घटते-बढ़ते महत्व के बावजूद पश्चिमी देशों में दूसरे विश्वयुद्ध के बाद की सरकारों के कार्यकलाप को ध्यान में रखकर **एक वर्ग-राज्य के रूप में राज्य की पुनर्रचना** के प्रयास करते आए हैं। उन्हें राजनीतिक शक्ति और वर्गीय शक्ति के बीच संबंध दिखाने में सफलता भी मिली है।

11.5.1 शक्ति की बहुलवादी धारणा

जैसा कि प्रस्तावना में कहा गया, बहुलवादियों के लिए शक्ति विरोधों के बावजूद व्यक्ति द्वारा अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता का नाम है। **राबर्ट डाह्ल** ने शक्ति का वर्णन इस प्रकार किया है: 'एक बुद्धिसंगत संबंध, जैसे **'अ'** की इस प्रकार काम करने की क्षमता कि वह **'ब'** के प्रत्युत्तरों को नियंत्रित कर सके।' उन्होंने इसका वर्णन इस प्रकार भी किया है: **'अ'** द्वारा **ब** से कुछ ऐसा काम कराने का सफल प्रयास जिसे **ब** अन्यथा नहीं करता।' डाह्ल ने शक्ति की धारणा का इस प्रकार वर्णन और निरूपण किया है कि वह उद्देश्य और तत्परता जैसे मनोनिष्ठ तत्व पर जोर देते हैं तथा उसमें एक टकराव के संबंध का भाव निहित है। केन्द्रीय मुद्दा **ब** के विरोध पर काबू पाना है। ऐसी स्थिति में शक्ति तात्कालिक घटनाओं के नियंत्रण पर आधारित होती है।

न्यू हैवेन शहर में राबर्ट डाह्ल के अनुभवाश्रित अध्ययनों का शीर्षक *हू गर्वन्स* है। (प्रस्तावना में इसका उल्लेख किया गया है।) इसमें नीतियों के निर्माण में शामिल कर्ताओं की क्षमताओं की खोज की गई है। इस परियोजना-अध्ययन का निष्कर्ष यह था कि नगर में निर्णय की प्रक्रिया बहुत से गठजोड़ों का बहुलवादी लोकतंत्र है। शक्ति बिखरी हुई और असंग्रही है। पूरे समाज में बिखरे तथा विभिन्न और परस्पर विरोधी हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले अनेक समूह शक्ति में भागीदार हैं। ऐसी बहुलता शक्ति की असमानता में योगदान देती है तथा धन, स्थिति, शिक्षा आदि के असमान वितरण में भी। नीतियों के निर्धारण में शक्ति संबंधी टकराव, नगर के मेयर के पद के लिए विभिन्न हितबद्ध समूहों के परस्पर विरोधी दावे अंततः नागरिकों की भलाई के लिए सकारात्मक नीतियों के निर्धारण में सहायता देते हैं। शक्ति के लिए विभिन्न **समूहों की प्रतियोगिता** लोकतंत्र में संतुलन पैदा करती है तथा अनुकूल नीतियों के निर्धारण में भी सहायता देती है। यही अमेरिका के अनुभवाश्रित लोकतंत्र (इंपीरिकल डेमोक्रेसी) के सिद्धान्त की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण मान्यता है। यह शक्ति की व्यक्तिवादी और स्वैच्छावादी धारणाओं से भी मेल खाती है।

11.5.2 अमेरिका का अनुभवाश्रित लोकतांत्रिक सिद्धान्त या शास्त्रीय बहुलवाद

अमेरिका के अनुभवाश्रित लोकतंत्र के सिद्धान्त या शास्त्रीय (क्लासीकल) बहुलवाद का जन्म **जेम्स मैडिसन** और **फेडरलिस्ट पेपर्स** के युग में हुआ। मैडिसन ने हाब्स की इस मान्यता को फिर दोहराया कि व्यक्तियों में अपने साथ के व्यक्तियों पर शक्ति पाने की एक स्वाभाविक इच्छा होती है। उन्होंने फेडरलिस्ट नंबर 10 में कहा कि 'गुटबंदी के प्रच्छल कारण ..... मनुष्यों के स्वभाव में मौजूद है।' उन्होंने 'संपत्ति के असमान वितरण' की पहचान गुटबंदी के सबसे आम और स्थायी स्रोत के रूप में की। लेकिन मैडिसन के तर्कों के समकालीन समर्थकों ने उनके मत को मूलगामी ढंग से बदल दिया है। अनुभवाश्रित लोकतंत्र के सिद्धान्तकारों का दावा है कि गुट मुक्त संगठन के सामाजिक समकक्ष से अधिक भी कुछ होते हैं। समकालीन समाज में गुट हितबद्ध समूहों का रूप ले लेते हैं और लोकतंत्र में स्थायित्व के स्रोत व उसकी केन्द्रीय अभिव्यक्ति हैं।

11.5.3 समूह सिद्धान्त

लोकतंत्र के सिद्धान्त के सबसे मुखर प्रतिपादकों के रूप में समूह सिद्धान्त के समर्थकों ने अमेरिकी लोकतंत्र में **संतुलन की प्राप्ति के लिए समूहों की अंतःक्रिया** के महत्व पर जोर दिया है। इसमें **डेविड ट्रुमैन** जैसे इन सिद्धान्तकारों की शक्ति की परिकल्पना वेबरवादी ढंग से की गई है। लेकिन राज्य स्वायत्त इकाई नहीं है, न तो वेबरवादी अर्थ में और न मार्क्स के अर्थ में जिन्होंने राज्य की परिवर्तन की क्षमता को समाज के लिए केन्द्रीय तत्व कहा। समूह सिद्धान्त के समर्थकों की राय में राज्य शक्ति के सोद्देश्य व्यवहार की प्रतिक्रिया है। शक्ति समाज के अंदर विखंडित होती है। ट्रुमैन को भी यही आशा थी कि परस्पर विरोधी हितों से एक अपेक्षाकृत सुसंगत नीति का जन्म होता है।

राबर्ट डाह्ल डेविड ट्रुमैन के बाद एक और समूहवादी सिद्धान्तकार थे। उन्होंने **गुटों** के बारे में मैडिसन के केन्द्रीय सरोकार को स्वीकार किया और उन्हें लोकतंत्र की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति माना। डाह्ल ने इसे **'पालिआर्की'** नाम दिया और कहा कि विभिन्न हितों की प्रतियोगिता लोकतंत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। अपनी रचना *पावर : ए रैडिकल व्यू* में **एस ल्यूक्स** का तर्क है कि 'किसी व्यवस्था का झुकाव व्यक्तिगत स्तर पर चुनी गई क्रियाओं की श्रृंखला से ही नहीं बल्कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि समूहों के सामाजिक स्तर पर ढांचाबंद और सांस्कृतिक रूप से निर्धारित व्यवहारों और संस्थाओं के कार्यकलापों से भी सहारा पाता है।' विरोध के बावजूद व्यक्तियों की अपनी इच्छा पूरी करने की क्षमता के रूप में शक्ति की यह धारणा सामूहिक शक्तियों और सामाजिक व्यवस्थाओं के महत्व को अनदेखा करती है। इसी कारण से शास्त्रीय बहुलवादी वर्गों, नस्लों, लिंगों, राजनीतिज्ञों और नागरिकों के बीच शक्ति के असंतुलन को समझने में नाकाम रहे और इस तरह वे शास्त्रीय बहुलवाद की मान्यताओं को चूर-चूर करने के जिम्मेदार बने। **नए वामपंथ (न्यू लेफ्ट)** से जुड़े राजनीतिक समहों के उदय ने भी अमेरिका में राजनीतिक संतुलन को बदला। वियतनाम युद्ध विरोधी आंदोलन, छात्र आंदोलन, नागरिक अधिकार आंदोलन आदि के नाम पर राजनीतिक ध्रुवीकरण हुआ। न्यू लेफ्ट और उसका राजनीतिक ध्रुवीकरण बहुलवाद की मान्यताओं से मेल नहीं खाते थे और इसके फलस्वरूप शक्ति की प्रकृति और वितरण को समझने में बहुलवाद की कमजोरियों से वास्तविकता को समझने में बहुत सारी कठिनाइयाँ पैदा हुईं। शक्ति की समझ के लिए किए गए बहुत सारे अनुभवाश्रित अनुसंधानों ने भी यही साबित किया कि राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता के लिए बहुत सारे समूहों के पास संसाधन भी नहीं हैं क्योंकि राष्ट्रीय राजनीति पर शक्तिशाली

राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय निगमों का नियंत्रण है और वे ही इसमें जोड़-तोड़ करते रहते हैं। अनुभवाश्रित व अवधारणात्मक, दोनों दृष्टियों से इन समस्याओं की स्वीकारोक्ति ने शास्त्रीय बहुलवादी सिद्धान्त को समाप्त कर दिया तथा नए और परस्पर विरोधी सिद्धान्तों को जन्म दिया।

11.5.4 निगमवादी सिद्धान्त

1970 के दशक के अंत तक निगमवादी (कारपोरिटिस्ट) सिद्धान्त अनुभवाश्रित लोकतांत्रिक सिद्धान्त की तीखी आलोचना करने लगा। 1977 में **लियो पैनिख्** ने अपने लेख **'द डवलपमेंट ऑफ कारपोरोटिज्म इन लिबरल डेमोक्रेसीज'** (पत्रिका *कंपरेटिव पोलिटिकिल स्टडीज* में प्रकाशित) में स्पष्ट किया कि 'वर्गीय समन्वय व जीवंत एकता समाज के लिए अनिवार्य हैं और इसे तभी प्राप्त किया जा सकता हैं जब विभिन्न प्रकार्यात्मक समूह, खासकर पूँजी और श्रम के संगठन, प्राकृतिक अधिकारों व दायित्वों की ऐसी भावना से ग्रस्त हो जो उससे मिलती-जुलती भावना हो जो मध्यकालीन जनवर्गों (एस्टेट्स) को बांधकर रखे हुए थी।' **जीवंत एकता** (आर्गेनिक यूनिटी) का सिद्धान्त ही निगमवाद का केन्द्रीय विचार है। **जे.टी. विंकलर** ने कहा है कि इसमें "समाज को ऐसे विविध तत्वों से निर्मित माना गया है जो एक निकाय में एकजुट हों, एक काया (कार्जस) बनाते हों, निगमवाद नाम इसी कारण पड़ा है।" फासीवादी इटली और नाजीवादी जर्मनी यूरोपीय निगमवाद के प्रमुख उदाहरण माने जाते थे।

लेकिन उत्तर-उदारवादी, उन्नत पूँजीवादी राज्यों के उदय के साथ, (ये राज्य साथ ही साथ सुसंगठित लोकतंत्र और कल्याणकारी राज्य भी है), निगमवाद का एक नया रूप पैदा हुआ जिसे सामाजिक निगमवाद (सोसाइटल कारपोरेटिज्म) कहते हैं। **फिलिप श्मिटर** '(स्टिल द सेंचुरी ऑफ कारपोटिज्म?', *रिव्यू ऑफ पोलिटिकल स्टडीज*, 1974) के शब्दों में समकालीन या सामाजिक निगमवाद '*हितों के प्रतिनिधित्व की ऐसी व्यवस्था है जिसमें घटक इकाइयाँ सीमित संख्या में एकक, अनिवार्य, सोपानबद्ध और प्रकार्यात्मक दृष्टि से विभेदीकृत श्रेणियों में संगठित होती हैं।* ये श्रेणियाँ राज्य द्वारा (रचित न सही) मान्यता प्राप्त या अनुमति प्राप्त होती हैं तथा नेताओं के चयन में और मांगों व समर्थन की अभिव्यक्ति में थोड़े-बहुत नियंत्रण के बदले अपनी अपनी सीमाओं के अंदर उन्हें जाने-बूझे ढंग से प्रतिनिधित्व का एकाधिकार दिया जाता है।'

सामाजिक निगमवाद के उदय का कारण क्या था? 1920 के दशक से ही विभिन्न वर्गीय शक्तियों ने जो संतुलन बना रखा था उसमें आए परिवर्तनों ने बहुलवाद को समाप्त कर दिया और उसकी जगह सामाजिक निगमवाद को जन्म दिया। **श्मिटर** की राय में **निगमवाद का सिद्धान्त मार्क्सवादी और बहुलवादी सिद्धान्तों की केन्द्रीय अवधारणात्मक मान्यताओं का समन्वय है।**

निगमवादी बहुलवादियों की इस बात से सहमत हैं कि नीतियों का निर्धारण हितबद्ध संगठनों के परस्पर विरोधी दावों से होता है। पर उनका तर्क यह है कि ये संगठन अब अल्पतंत्रों की तर्ज पर विकसित हो रहे हैं। निगमवादियों ने मार्क्सवादियों के इस तथ्य को स्वीकार किया कि वर्गीय टकरावों का अस्तित्व बुनियादी है तथा राज्य और समाज की अधिकांश गतिविधियाँ वर्गीय पुनरुत्पादन करती हैं। साथ ही साथ परंपरागत निगमवादी भी जीवंत एकता के सिद्धान्त को सुरक्षित रखता है।

अनुभवाश्रित दृष्टिकोण से निगमवाद केवल **आस्ट्रिया** और **नीदरलैण्ड** में सफल हुआ।

11.6 मार्क्सवादी सिद्धान्त

1970 और 1980 के दशकों में मार्क्सवादी लेखकों में राजसत्ता में महत्वपूर्ण ढंग से और नए सिरे से रुचि जागी। **राल्फ मिलिबांड** ने यूरोप और अमेरिका के समाजों में राज्य की केन्द्रीयता को स्पष्ट किया। उन्होंने मार्क्सवादी दृष्टिकोण से **वर्ग-राज्य** संबंधों का तथा बहुलवादी दृष्टिकोण से राज्य-समाज संबंधों का अध्ययन किया। मिलिबांड ने इस विचार का विरोध किया कि राज्य सामाजिक हितों का एक तटस्थ मध्यस्थ होता है। उन्होंने यूरोपीय समाजों में एक ऐसे शासक वर्ग को मौजूद पाया जो उत्पादन के साधनों को नियंत्रित करता है। उन्होंने राजनीतिक दलों, सेना, विश्वविद्यालयों और संचार माध्यमों से इस वर्ग के संबंध दिखाए, राज्य के लगभग सभी विषयों में इस वर्ग की नेतृत्वकारी स्थिति दिखाई, नागरिक कर्मचारियों की सामाजिक पृष्ठभूमि दिखाई और उनका वैचारिक मानसिक झुकाव दिखाया। इसका मतलब यह था कि (मिलिबांड के शब्दों में) **'राज्य उन्नत पूँजीवाद में निहित शक्तियों व विशेषाधिकारों की संरचना को' बढ़ावा देता है**।

निकोलस पोलांजा और माइकेल फोकाल्ट दूसरे प्रमुख आधुनिक मार्क्सवादी विचारक हैं। पोलांजा का प्रमुख सैद्धान्तिक योगदान राजसत्ता के ही बारे में है। उनकी राय में राजसत्ता राज्य के संस्थागत स्वरूप तथा राजनीतिक वर्गीय शक्तियों के बदलते चरित्र के बीच होने वाली अंतःक्रिया का परिणाम है।

शक्तिः वर्गीय हितों को पूरा करने की क्षमता

शक्ति व रणनीतियों के बारे में **पोलांजा** का विश्लेषण *पोलिटकल पावर एंड सोशल क्लास* में पाया जाता है। उन्होंने एक विशेष संदर्भ में **शक्ति** की पहचान **वर्गीय हितों को पूरा करने की क्षमता** के रूप में की और फिर इन हितों की परिभाषा ऐसी वस्तुओं के रूप में की जिनको व्यावहारिक **वर्गीय उद्देश्यों** का एक दायरा माना जा सकता है। यहाँ जोर वर्गीय हितों की व्यावहारिकता और उन्हें पूरा किए जा सकने की क्षमता पर था। उन्होंने इस पर भी जोर दिया कि शक्ति कोई निश्चित राशि नहीं होती। *पोलिटकल पावर एंड सोशल क्लास* तथा अपनी बाद की रचना *स्टेट, पावर, सोशलिज्म* दोनों में उन्होंने यह तर्क विकसित किया कि राज्य स्वयं एक सामाजिक संबंध है और वर्गीय हित, वर्गीय शक्ति और वर्गीय रणनीतियाँ सभी आपस में जुड़ी होती हैं।

माइकेल फोकाल्ट एक फ्रांसीसी दार्शनिक और इतिहासकार थे। अपनी रचनाओं *डिसिप्लीन एंड पनिश* तथा *दि विल टू नो* में उन्होंने आधुनिक समाजों में शक्ति की प्रकृति की विस्तार से विवेचना की है।

फोकाल्ट और पोलांजा, दोनों ही शक्ति के बारे में किन बातों पर सहमत हैं?

अ) **शक्ति एक संबंध होती है**। तात्पर्य यह कि शक्ति राज्य के विकास के दौरान परिस्थितियों के एक विशेष संयोग से पैदा होती है।

ब) **शक्ति मात्र दमनात्मक और नकारात्मक की बजाय उत्पादक और सकारात्मक भी होती है। फोकाल्ट** ने शक्ति के दमनात्मक मानने वाले विचारों को अस्वीकार किया। **पोलांजा** ने राज्य को एक वर्ग-विभाजित समाज में सामाजिक एकजुटता का कारक माना। इस तरह **शक्ति का केन्द्रीय साधन** अर्थात् **राज्य** एक उत्पादक भूमिका वाली संस्था है। राज्य परस्पर टकराने वाले वर्गों के बीच संतुलन लाता है और किसी वर्ग को शक्ति से वंचित नहीं करता।

स) शक्ति प्रतिरोध को जन्म देती है। प्रतिरोध जवाबी प्रतिरोध को जन्म देता है।

द) उन्होंने शक्ति के प्रति उदारवादी और मार्क्सवादी दृष्टिकोणों को अस्वीकार किया क्योंकि ये दृष्टिकोण शक्ति को आर्थिक प्रकार्यों के अधीन बतलाते हैं।

य) उन्होंने कहा कि शक्ति और ज्ञान के बीच एक गहरा संबंध है। उनका निष्कर्ष था कि मानसिक और शारीरिक श्रेणियों में ज्ञान का विभाजन राजनीतिक व वैचारिक वर्गीय प्रभुत्व को जन्म देता है।

र) उन्होंने सभी सामाजिक संबंधों में शक्ति को व्याप्त माना।

ल) **संघर्षों की समझ** सभी सामाजिक संघर्ष शक्ति जतलाने का एक रूप हैं।

फोकाल्ट और पोलांजा के बीच सहमति के क्षेत्रों को देखने के बाद अब हम उनमें असहमति के क्षेत्रों को देखेंगे। **पोलांजा** ने **फोकाल्ट** की आलोचना इस आधार पर की कि:

1) उन्होंने शक्ति के संबंधों को एकमात्र वस्तु कहा,

2) उन्होंने शक्तियों के बिखराव का तर्क दिया। उन्होंने कहा व्यक्ति के लिए स्वयं को राजसत्ता के बाहर स्थित कर सकना असंभव है। लोक-संघर्ष और आंदोलन राज्य और शक्ति की व्यवस्थाओं को प्रभावित करते हैं।

फिर भी फोकाल्ट और पोलांजा, दोनों ही शक्ति की विवेचना सभी सामाजिक संघर्षों की एक बुनियादी विशेषता के रूप में करते हैं। इस कार्य में उन्होंने शक्ति-संबंधों के रणनीतिक चरित्र को तथा शक्ति के विभिन्न केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट किया है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों के साथ अपने उत्तरों को मिलाइए।

1) निगमवादियों ने शक्ति और राज्य को किस प्रकार समझा?

.....

.....

.....

.....

2) शक्ति की विस्तृत विवेचना करने वाले दो नव-मार्क्सवादी कौन-कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

3) बतलाइए कि निम्नलिखित वक्तव्य **सही** हैं या **गलत** हैं:

   अ) पोलांजा एक बहुलवादी थे।

   ब) फोकाल्ट ने कहा: 'राज्य को समाप्त हो जाना चाहिए।'

   स) पोलांजा ने कहा: 'शक्ति और ज्ञान परस्पर संबंधित होते हैं।'

   द) राबर्ट डाह्ल *हू गवर्न्स* के लेखक हैं।

   य) अमेरिका के अनुभवाश्रित लोकतंत्र के सिद्धान्त के मूल फेडरलिस्ट पेपर्स में पाए जा सकते हैं।

11.7 सारांश

इस इकाई में हमने **शक्ति** का तथा **राज्य** और **वर्गों** से उसके **संबंध** का अध्ययन किया। हमने यह भी देखा कि **विभिन्न सिद्धान्तकारों** ने **शक्ति-संबंधों** को किस प्रकार समझने का प्रयास किया है। हमने राज्य-समाज संबंधों के विभिन्न पक्षों का अध्ययन भी किया। **कार्ल मार्क्स** का तर्क था कि सामान्यतः राज्य और विशेषकर नौकरशाही द्वारा संचालित विभिन्न संस्थाएँ स्वयं को विभिन्न रूपों में व्यक्त करती हैं और शक्ति का स्रोत होती हैं। नौकरशाही के बारे में **मैक्स वेबर** का वर्णन ऐसे ही विचारों पर आधारित है। जहाँ मार्क्सवादियों ने वर्ग, शक्ति और राज्य के प्रश्नों को इस प्रकार समझा है वहीं एक बहुलवादी परिप्रेक्ष्य में उन्होंने शक्ति की छानबीन के महत्व को अनदेखा किया है। दूसरी ओर **निगमवाद** ने **हितबद्ध समूहों के व्यवहार** को राज्य समाज संबंधों की **पूँजीवादी समझ** से जोड़ने का प्रयास किया है। हमने सामाजिक निगमवाद के विचारों को भी देखा जिनके अनुसार घटक **इकाइयाँ सुव्यवस्थित सोपानिक सिद्धान्तों** के आधार पर संगठित होती हैं तथा उन्हें कुछ नियंत्रणों के व्यवहार के कारण प्रतिनिधित्व की स्वायत्तता दी जाती है।

संक्षेप में, **शक्ति** सिर्फ एक कर्ता द्वारा दूसरे के व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता ही नहीं होती। समाज में विभिन्न कर्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यमान संस्थाओं और सामूहिक निकायों के अंदर शक्ति का व्यवहार एक सुविधा के रूप में करते हैं। सरकार और राज्य के कार्मिकों द्वारा शक्ति का व्यवहार अभिप्रायों और उद्देश्यों की दृष्टि से किया जाता है।

शासन व्यवस्थाएँ प्रभुत्वशाली समूहों की शक्ति से तथा संसदीय व लोकतांत्रिक प्रणालियों के सिद्धान्तों से भी सीमाबद्ध होती हैं। शासन व्यवस्थाओं की शक्ति और राज्य की नीति को तीन प्रमुख विधियाँ निर्धारित करती हैं: **औपचारिक नियम** जो शासन की शक्ति तक पहुँच प्रदान करते हैं; नीतियों को लागू करने की **संस्थागत व्यवस्थाएँ**, तथा संसाधन प्रदान करके राज्य की नीतियों को बल प्रदान करने के बारे में **अर्थव्यवस्था की योग्यता**।

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) केनेथ बोल्डिंग - *थ्री फेसेज ऑफ पावर* के लेखक।

2) अभिजातवादी सिद्धान्त छोटे से एक शासक वर्ग अभिजात वर्ग के अस्तित्व को तथा उस विशाल जनसंख्या के अस्तित्व को मानकर चलता है जिस पर ये अभिजात शासन करते हैं।

3) अभिजातवाद और बहुलवाद के बीच अंतर यह है कि जहाँ अभिजातवाद एक अल्पमत के शासन की बात करता है वहीं बहुलवाद बहुमत के शासन की बात करता है। बहुलवाद विविधता का सिद्धान्त हैं।

बोध प्रश्न 2

1) निगमवादी जीवंत एकता के सिद्धान्त में विश्वास करते थे। विभिन्न प्रकार्यात्मक समूहों, खासकर पूँजी और श्रम के संगठनों को चाहिए कि समाज में वर्गीय समन्वय और जीवंत एकता सुनिश्चित करने के लिए अपने प्राकृति अधिकारों और दायित्वों को समझें। राज्य को चाहिए कि प्रकार्यात्मक आधार पर विभेदीकृत श्रेणियों के लिए प्रतिनिधित्व की स्वायत्तता सुनिश्चित करें। उनके पास राज्य द्वारा दी गई स्वायत्तता के अंदर कार्य करने का एकाधिकार होता है।

2) फोकाल्ट और निकालए पोलांजा

3) अ) गलत

ब) गलत

स) सही

द) सही

य) सही